समसामयिक आधुनिक कला का स्वरूप

मुकेश कुमार
शोध छात्र,
दिंगम्बर जैन कॉलेज बड़ौत, बागपत,
ईमेल –mk4345445@gmail.com

डा0 (श्रीमति) गीता राणा
शोध निर्देशिका, अध्यक्षा/एसो0 प्रोफेसर
दिंगम्बर जैन कॉलेज बड़ौत, बागपत,

सारांश

आज कला का स्वरूप देखा जाये तो एक क्रमबद्ध परिर्वतन है जो प्राचीन काल से आजतक परिवर्तन का एक माध्यम है। वो निरन्तर क्रम से देखा गया हैं क्योंकि परिवर्तन संसार का प्रथम नियम है। वह चाहे दिनचर्या हो, कोई व्यवसाय हो या अन्य प्रत्येक मानुष अपने जीवन में परिवर्तन चाहता है या फिर समयनुसार हो जाता है।

प्राचीन काल से मानुष की दिनचर्या में आज तक जो परिर्वतन हुआ वह एक मानुष का सुधरा हुआ रूप है। वो प्रागैतिहासिक काल से होता हुआ आज "समसामयिक आधुनिक काल का स्वरूप" है यह एक क्रमबद्ध परिवर्तन है। प्रागैतिहासिक काल से इसका आरम्भ होता है और जोगीमारा, बाघ, अजन्ता, एलोरा आदि शैलियों और लघु चित्रो–पाल, जैन राजस्थानी, मुगल, पहाड़ी, शैलियों और इसके बाद कम्पनी और पुनरूत्थान स्कूल या बंगाल शैली से उत्तरोत्तर विकसित हुआ। यह विकास समसामयिक आधुनिक कला को नया स्वरूप प्रदान करता है और कलाकरों को एक नवीन दशा में सोचने का अवसर मिला। जो एक स्वतन्त्र दायरा है इसी क्रमबद्ध विकास में पुनरूत्थान स्कूल के साथ–साथ कलाकारों में परिवर्तन हुआ और अपनी बात अपने तरीके से कहने का अवसर मिला जिसमें स्वतन्त्र दायरा अपनाने की पहल की जिससे कलाकारों के अनेक ग्रुप/समूह बने जिससे कलाकारों को "स्वान्तः सुखाय" की उक्ति मानकर चला "बहुजन हिताय" का शब्द आधुनिक कलाकारों ने मिटा दिया और अपने तरीके से कार्य किया जो निम्न ग्रुप/समूह है –

1. *प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट समूह (पैग)*
2. *कलकत्ता समूह*
3. *दिल्ली शिल्पी चक्र*
4. *समूह – 1890*
5. *समूह – 8*

उपरोक्त समूहों ने अलग–अलग स्वतन्त्र शैली में कार्य किया। समूह – 1890 की अहम भूमिका है। जिसने स्वतन्त्र का दायरा अपनाया जो समसामियक आधुनिक कला को एक नया स्वरूप प्रदान करता है।

मुख्य शब्द *– कला का स्वरूप, क्रमबद्ध परिवर्तन, निरन्तर क्रम, मानुष की दिनचर्या, प्रागैतिहासिक काल, जोगीमरा, बाघ, अजन्ता, एलोरा, पाल, जैन, राजस्थानी, पहाड़ी, मुगल, पहाड़ी शैली, कम्पनी, पुनरूत्थान, समसामयिक, आधुनिक कला, स्वतन्त्रता का दायरा, ग्रुप/समूह, स्वान्तः सुखाय, बहुजन हिताय, आदि।*

प्रस्तावना

समसामयिक तथा आधुनिक चित्रकला के द्वारा हम अपने आन्तरिक मन से ब्राहय जगत का दर्शन करते हैं तथा अपनी अभिव्यक्ति के माध्यम से ब्राहय जगत से आन्तरिक मन को देखते हैं। पहली कला को हम आँखों से स्पष्ट देख सकते हैं। जबकि दूसरी कला को हमें अतंस में झाँकना पड़ता है। स्वतन्त्रता दोनों कलाकारों को होती है।

प्राचीन काल से आधुनिक काल तक के कलाकार यह कहता है कि वह एक प्रयोग कर रहा है जिसमें वह अपने मनोभावों को व्यक्त करके आत्मानन्द की प्राप्ति करता है। लेकिन यह कला तक का ही दायरा नहीं है यह हम किसी की क्षेत्र में देख सकते हैं वह चाहे कलाकार हो या व्यवसायिक क्षेत्र। उसका कार्य उसे ही आत्मानन्द की प्राप्ति कराता है। फिर हमारी कला भी इससे अछूती नहीं रही। वह सामाजिक और धार्मिक क्षेत्रों में की अग्रणी रही है। जो एक पत्थर की पूजा से मूर्तियों और तस्वीरों, पेन्टिंगस में क्रमबद्ध देखने को मिलता है।

श्री चिरंन्जी लाल झा के शब्दों में वास्तविक कला के द्वारा हम अपने आन्तरिक व ब्राहय जगत का दर्शन करते हैं। क्योंकि वास्तविक कला का अर्थ प्रतिपादन की सच्चाई और यथार्थता की सत्यता है। भावात्मक कला का अर्थ प्रकृति की पवित्र और आवश्यक आकृति और उसका सूक्ष्म भावपूर्ण विवेचन करना है।

आधुनिक काल में कुछ कलाकार केवल रंगों के माध्यम से ही अपनी अभिव्यक्ति करते हैं। इस प्रकार के चित्रों में कोई चित्र या आकृति नहीं होती है, केवल रंगों के धब्बे होते हैं तथा प्रत्येक धब्बा कुछ भाव लिये हुये है। प्रत्येक कलाकार को शैली उसके स्वभाव तथा मनेविज्ञान पर आधारित है और वह अपनी ही नहीं जनमानस की आत्मसन्तुष्टी कराता है।

समसामयिक आधुनिक चित्रकला भारत में नवीन वादों पर आधारित चित्रकला कुछ मुख्य केन्द्रों पर फैली है। जहाँ से कलाकारों को स्वतन्त्र रूप से कार्य करने का अवसर मिला। वह केन्द्र बम्बई, दिल्ली और कलकत्ता इन केन्द्रों पर नवीन प्रयोग हो रहे हैं। बम्बई में प्रयोगवादी कलाकरों में एक नवीन शैली है। उनमें चावड़ा, बेन्द्रे आदि प्रमुख है कुछ कलाकार प्रोग्रेसिव ग्रुप के कहे जाते हैं जिनमें हुसैन, आरा, सूजा, फ्रॉसिस आदि हैं और ग्रुप – 1890 के चित्रकारों में जे राम पटेल, जेस्वामी नाथन, अम्बादास, मौ0 शैख, ऐरिक वोवेन, ज्योति भट्ट आदि ने भी नवीन चित्र शैली में देश में एक नवीन चित्र शैली को अग्रसर किया।

समसामयिक कला के अन्तर्गत दिल्ली में कुछ कुशल कलाकारों को जन्म दिया जिनकी कला नवीन कला है। इन कलाकारों में सतीश गुजराल, कुलकर्णी, शैलोज मुखर्जी, व वीरेन दे आदि है। इन कलाकारों ने रंग की सूक्ष्मता के प्रभाव से भाव व्यक्त किये।

कलकत्ता जो एक नवीन कला या पुनजागृति का केन्द्र था। जो आरम्भ से ही लोक–कला से प्रेरणा लेकर प्रभाववादी चित्रों की रचना की। कलकत्ता के कलाकारों ने नवीन मानवतावादी क्षेत्र में कार्य किया है इस केन्द्र के कलाकार कलकत्ता ग्रुप से सम्बन्धित है जिनमें गोपाल घोष, कमलदास गुप्त, गोवर्धन, हेमन्त मिश्र आदि थे।

भारतीय कला का वर्तमान "जब पेशेवर कला समीक्षक नहीं थे और भारतीय कलाकरों को बार–बार बताकर थका नहीं दिया जाता था कि वे भारतीय है तो बाहर से प्रेरणा लेने के बावजूद वे सहज रूप से भारतीय नजर आते थे।" उपरोक्त कथन के दायरे को समझने के लिए वर्तमान में "आधुनिक" शब्द से हम चाहे कितने ही ऊब जाये लेकिन आधुनिक शब्द ज्यादा सदी का नहीं है। इस तथ्य को हम आसानी से स्वीकार कर सकते है। क्योंकि समकालीन के समक्ष रवींद्रनाथ टैगोर और अमृता शेरगिल से आधुनिक भारतीय कला की शुरूआत हुई।

इन दोनों कलाकारों ने कला के क्षेत्र में जो योगदान दिया वह आज एक स्वतन्त्र पहल के रूप में देखा जा रहा है।

भारत उन देशों में है जहाँ एक ही तरफा काम नहीं होता है यहां एक परम्परा सक्रिय नहीं बल्कि अनेक परम्पराएं है। स्वंय कलाकरों ने यह माना है की भारतीय यर्थाथ कोई एक तरह का यर्थाथ नहीं है अर्थात कलाकार अपने अर्न्तआत्मा के अनुसार एक समय से दूसरे समय में जा सकता है। आज समाज में मानव अनेकों यंत्रविधि पर निर्भर है और अपनी जीवन पद्धति को अपनी अभिव्यक्ति को बहुत पास से खोज सकते हैं।

इससे कलाकारों के आत्मसात अनुभव पर निर्णायक असर पड़ता है आज भारतीय आधुनिक कला परम्परागत रूप से चली आ रही पाश्चात्य कलाओं का विस्तार व्यर्थ है जिसमें अभिव्यंजनावाद, धनवाद, अतियथार्थवाद, अमूर्तन, आकृतिमूलकता आदि वर्गीकरण समकालीन भारतीय कला के दायरे को समझने के लिए सही सिद्ध नहीं है।

भारतीय कलाकार पाश्चात्य नकल और उसको गुलामी की जंजीरों से मुक्त हुआ और उसने अपनी परंपरा से एक रचनात्मक रास्ता बनाया और स्वतंन्त्रता के सारे रास्ते स्पष्ट हो गये और स्वतन्त्र शैली का दायरा उसके हाथों में आ गया और उसके पास रचनात्मक रूप में कई परंपराए उसके सामने उभर कर आई।

भारतीय कलाकार ने सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक दायरे का बहुत सूक्ष्म अध्ययन कर स्पष्ठ कर दिखाया है जो एक कैमरा दिखाता है। भारतीय कलाकारों के लिए आधुनिक युग एक कैमरे का युग है। जो अपने अधीन कार्य करता है यह प्रकृति में उस रेखा को दिखाता है जो कलाकार भूला हुआ था जो एक अभिव्यक्ति की अर्न्तआत्मा है कलाकार की स्वतन्त्रता है वह अपनी अभिव्यक्ति से पूर्ण रूप से सन्तुष्ट है।

आधुनिक भारतीय कलाकार हीन भावना से मुक्त हुआ और उसने कई संस्थाओं और केन्द्रों का निर्माण किया जिसमें कलाकारों को स्वतन्त्रता मिली अपने विचारों को प्रकट किया और समूह में रहकर अलग–अलग कार्य शैली अपनाई और अपनी बात अपने तरीके से कहने का अवसर मिला वह चाहता था की भारतीय कला–शैली सुधार के पक्ष में हो। काफी प्रयत्नों से ये

कलाकार व्यक्तिगत स्तर पर विकसित की गयी कला शैली गढने में सफल हुआ है और आधुनिक शब्द एक सोच और एक विचार भी है, जो समाज में मानव के प्रति अधिक जागरूक व इस दुनिया के दृष्टिकोण को सही मार्ग दिखलाती है।

आज जीवन का प्रत्येक पक्ष आधुनिकता से परिपूर्ण और स्वतन्त्र है। आधुनिकता केवल एक ही जगह स्थिर नही रही वह अपनी गति से बड़ रही है। यह विकसित या अविकसित देशों में ही नहीं अपितु मानव जीवन के हर क्षेत्र में देखी जा सकती है। आज विश्व का प्रत्येक देश आधुनिकता को आत्मसात करने में लगा है लेकिन देखा जाये तो इस आधुनिकता से एक नई पहल होती है जो कुछ देश के अस्तित्व को बनाये रखने में खतरा रहता है क्योंकि वह जीवन के पक्ष को गुलामी की दीवारों में बांधे रखना चाहता है वह नहीं चाहता की मानव जीवन के क्षेत्र में या फिर वो अपनी अभिव्यक्ति के विचारों से कार्य कर सके।

आधुनिकता के स्वरूप को समझने के लिये हमेशा, विद्ववानों, कला इतिहासकारों का आपस में मतभेद रहा है। अगर आप हम वर्तमान को ठीक–ठाक देख रहे है तो वह मानव मन की उपज है जो निरन्तर खोज व प्रयास का सफल परिणाम है जिसमे समय की गति के अनुसार वह सुधरा हुआ रूप है। मेरी नज़र में अगर हम आधुनिकता को समझना चाहते है तो मन एवं आत्मसात की प्रक्रिमा को समझना आवश्यक है।

आधुनिक भारतीय चित्रकला में यथार्थवादिता की समीक्षा में स्वतन्त्रता के समय नये आयामों का प्रयोग हुआ जिसे पुनर्जीवन देने का श्रेय कुछ प्रमुख कलाकारों को है कला गुरू अवनीन्द्रनाथ टैगोर, कला समीक्षक आनन्द कुमार स्वामी, ई0बी0 हैवल को है। इसके बाद इन कलाकारों को ओर भी आन्दोलनों का सामना करना पड़ रहा है। इनका उद्देश्य था कलाकार सदैव अपनी अभिव्यक्ति में नवीनता को खोज में रहे और उसकी सृजनात्मकता उसे नये आयामों की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा दे।

आधुनिक कला का स्वरूप कलाकारों की अलग–अलग शैली है, वह समाज और धर्म के दायरे से बाहर है जो उनकी सशक्त अभिव्यक्ति का माध्यम है और विशुद्ध भारतीय आधारों से प्रेरित होने वाली कला शैली रूप में एक नई प्रवृत्ति का विकास हुआ जो आप सभी कलाकारों के लिए प्रेरणा स्रोत है। आधुनिक कला का स्वरूप एक बहती जल धाराओं के समान है और यह जल धाराएँ एक नदी के रूप में समाहित होकर जीवन को आनन्दमय रंगों से पूर्ण कर देती है। क्योंकि कला वह अभिव्यक्ति है जिसमें विचारों का असीम क्रम बनता है। और इन्ही विचारों, अभिव्यक्तियों को व्यक्त करने के लिए मन में एक कुछ नया करने की तड़प हो उठती है जिसके लिये वह किसी भी माध्यम का प्रयोग कर एक स्वतन्त्र कृति को सुन्दर एवं साकार रूप देता है। यह अभिव्यक्ति हम देश–विदेश, के बाजारों वह चाहे औद्योगिक हो या कोई ग्रामीण क्षेत्र आप हमें इनके अर्न्तमन में जाकर इनकी तकनीकों से पता चलता है की यह एक बदलता ढांचा है जो सदियों से जंग की तरह छिपा हुआ था और जो आज साफ मन की तरह है जिसमें वह अपनी मर्जी के बीज बो सकता है और अपनी मर्जी की फसल उगा सकता है यही बात आप के मानव जीवन के पक्ष को एक सम्पन्न और साकार रूप देती है।

मुख्य रूप से हम देखे तो औद्योगिक क्रान्ति ने मानव के जीवन को ही प्रभावित नहीं किया बल्कि उसने हमारे सोचने, समझने तथा जीवन के विभिन्न पक्षों पर बहुत हद तक प्रभाव डाला है। इससे हमारे जीवन, साहित्य संस्कृति, कला आदि विभिन्न क्षेत्रों में आमूलचूक परिवर्तन हुआ आमूलचूक परिर्वतन का कारण स्वतन्त्रता प्राप्ति एवं नवीन खोज है। आधुनिक कला का स्वरूप उसको अवधारणा अचानक पनपती धारणा नहीं है इसकी जड़े स्वतन्त्रता से पहले स्मरण से जुड़ी हुई थी। यह ठीक उसी प्रकार से है जिस प्रकार गरीब व्यक्ति को अचानक अमीर होने की ख्याति प्राप्त हो या पहले किसी का गुलाम रहा हो वह उस सभी पलों को ध्यान रखता है और उन पलों से उभरना चाहता है। जो उसके जीवन पक्ष को सुनहरा कल प्राप्त कराता है। आधुनिक कला के स्वरूप को परिस्थितियों ने जहॉ एक तरफ विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया वही एक ओर नीति निर्धारक की बन गया कि रचनाओं के विषय माध्यम और शैली के चयन में कलाकार से ज्यादा बाजार की भूमिका हावी होने लगी। और कलाकृतियों को अभिव्यक्ति के माध्यम से अहमियत नहीं दी गयी बल्कि इन्हे कला प्रदर्शनियों की अहमियत दी गयी उनको सफलता एवं असफलता आकलन कृतियों की बिक्री से की जाने लगी और कुछ संस्थाओं में भी इसका प्रभाव देखा गया है जैसे निजी दीर्घाओं के संचालकों में एक बड़ा वर्ग ऐसा है जिसकी कला की समझ काफी सही है।

इन दीर्घाओं के अर्न्तगत इंटीरियर डिजाइनर या डेकोरेटर कलाकार को अपनी पसंद या सुविधानुसार रचनाओं को अपने तरीकों से डेकोरेट कराते थे और अभिव्यक्ति से परिपूर्ण रचनाओं को अनदेखा किया गया और जो सजावटी रचनाए हैं उन्ही को प्रसिद्धि मिली हैं। इसका दायरा काफी हद तक बढ़ चुका था। बाजार शैली ने कलाकारों की भावना व विचारों को एक सीमा में बांध दिया था। लेकिन समयानुसार बाजार शैलीयों का दायरा बहुत बड़ा होता गया मानव जीवन की भागदोड़ में लग गया और हमारे पास समय की कमी जैसे जो स्थितियाँ आ रही आ रही है उनमें हमे एक दूसरे के विचार को नहीं समझ सके। लेकिन यहाँ यह देखा गया आज जहाँ एकतरफा कलाकारों के लिए माहौल पहले की अपेक्षा अच्छा हुआ है वही दूसरी ओर जहाँ उसके सामने चुनौतियाँ भी उनसे भी उसको काफी गुणात्मकता में सुधार हुआ। जिससे आज वह इन संघर्षो से निकलकर कुछ नये व साकार रचनाओं को रूप प्रदान कर रहा है जो निरन्तर बढ़ते क्रम व विचारों से परिपूर्ण है।

इन विचारों का आधुनिक कला के विकास का यूरोप के समकालीन कला आन्दोलनों के विकास से सम्बंध रहा है। जबकि भारतीय कला का विकास क्रम यूरोप से भिन्न रहा है। 20वीं शताब्दी से पहले यहाँ की चाक्षुष कलाऐं अन्य बातों से अलग धार्मिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक या फिर अपने समाज के दायरे को सन्देश देने का एक माध्यम तक ही सीमित रही। इसके विपरित वर्तमान शताब्दी ने अपनी पहचान स्वंय प्रकृति के सौन्दर्यात्मक प्रयोजनों से निधार्रित की है। इन विशिष्ट पहलुओं से परिपूर्ण आधुनिक कला का युग महत्वपूर्ण चित्रमय स्वतन्त्र क्रान्ति का युग रहा है। इस युग का सूत्रपात वर्तमान शताब्दी के साथ आरम्भ हुआ। जिसका श्रैय वर्तमान युग के उन सभी कलाकारों को है जिन्होनें अपने भविष्य, आर्थिक, सामाजिक और

राजनैतिक परिस्थितियों की प्रवाह किए बिना अपना संघर्ष या साधना जारी रखी वह भी इतने थोड़े से समय में भारतीय चित्रकला को एक नई दिशा प्रदान की ये कलाकार विभिन्न वर्गों से सम्बंधित रहे है। कलकत्ता, बम्बई, दिल्ली, मद्रास, हैदराबाद और जयपुर इन केन्द्रों ने बहुत से सक्रिय कलाकारों को जन्म दिया जो वर्तमान में और भी कलाकारों को इनकी बहुत आवश्यकता है।

आधुनिक कला जीवन के स्वरूप की नवीनताओं, समसामयिक, सष्जनात्मक, सम्भावनाओं, संवेदनाओं तथा वैचारिक को समझने का एक प्रयास है अगर हम आधुनिकता की ओर एक दृष्टि डाले तो हम वह देखते हैं जिसमे हमें बदलती हुई जीवनचर्या, लोकव्यवहार तथा परम्परा सम्बंधों में जहाँ परिवर्तन देखा गया है वही कला का स्वरूप में भी भारी परिर्वतन हुआ है। इसी बदलाव को हम अपने अर्न्तमन में रेखांकित या उजागर कर सकते है। यह जो बदलाव हुआ है यह कोई बाहरी तल्वों का समावेश में नहीं हैं। यह हमारे आत्मिक विचारों भावनाओं का एक संग्रह है। इसमें कलाकार की आन्तरिक प्रेरणा और गहन संवेदना का अनुभव होता है। कला कभी कल्पना और जगत को समस्याओं व विखण्डित रूप को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाता है। आधुनिकता ने जीवन के वास्तविक को टुकड़ो में ही देखा है क्योंकि आन्तिरिक जीवन का चित्रांकन आसान है लेकिन संवेदन का चित्रांकन बड़ा ही मुश्किल है। कलाकार इन संवेदनाओं का अनुभव करने की खोज में संलग्न थे, न कि आन्तिरिक जीवन के चित्रांकन में और यह भी देखा जा रहा है कुछ आलोचकों का मानना है कि बीसवीं शताब्दी के चित्रकारों ने कला को एक नये दृष्टिकोण से देखा है जो मूलरूप से तकनीकों से लिप्त है। रूपाकार सम्बन्धी समस्याओं पर इतना अधिक ध्यान दिया गया है कि मानों अनुभवों से सफल हो। इस दायरे में रहने पर कलाकारों के बौद्धिक पक्ष पर इतना अधिक प्रभाव पड़ता है की आम आदमी या दर्शक इनका सक्रिय अनुभव नहीं कर पाता है। फिर भी आधुनिक कला ने हमारे व्यवहारिक पक्ष को प्रभवित किया है।

देखा जाये तो भारतीय कलाकारों को बीसवी शताब्दी को यूरोपीय कला ने कलाकारों को एक नई सोच प्रदान की। भारतीय परिवेश में विशेष तौर पर स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात जिन कला समूहो का गठन हुआ, उन्होने तत्कालीन युवा कलाकारों के अर्न्तमन में पनप रही परम्परा को निकालने में काफी योगदान दिया तथा विचारों व भावनाओं की सजृना को नये रूप में स्थापित करने का प्रयास किया। कला एवं कलाकार या उससे सम्बंधित अवधारणाऐं बाहर की ओर आने लगी और उन चार दीवारी के दायरे को लांग कर एक खुले मैदान में सांस लेने लगी। कलाकारों की स्वतन्त्र सोच माध्यमों की विविधता, आश्रयदाताओं से मुक्ति संचार एवं प्रसार माध्यमों का विस्तार प्रमुख कारण रहें। अब कलाकारों को बाहरी जगत की जानकारी मिलने लगी। और कलाकारों ने किसी के अधीन न मानकर, "स्वांन्तः सुखायः" हेतू कलाकृतियों का सृजन होने लगा। कला निश्चय ही विषय से और भावना से चित्रांकन तक की लम्बी यात्रा है। जिसमें कलाकारों को कठोर अनुशासन अध्ययन, अभ्यास की आवश्यकता हुई जिससे आज का कलाकार आधुनिक काल का एक सुधरा हुआ रूप है जिसने समय–समय पर अपने विचारों व अभिव्यक्ति

को दबाये रखने की कोशिश की लेकिन आधुनिकता का यह समय ज्यादा लम्बा नहीं चल सका यह एक ज्वालामुखी के लावा की तरह बाहर निकलना शुरू हो गया जिसकी जड़े काफी लम्बी थी जिसने एक पर्वत का रूप धारण कर लिया और अपनी स्वतन्त्रंता की मसाल दी जो मानव जीवन व उसके व्यवहारिक पक्ष के लिये बहुत जरूरी थी। कलाकार की यह मानसिक उपज काफी गहरी साबित हुई जिसमें पाश्चात्य रूढिवादी दफन हुई और प्रत्येक देश के नागरिक चाहे वह किसी भी क्षेत्र में कार्यरत हो एक नई दिशा में कुछ करने का मौका मिला जो आज हमारे सामने है । कलाकार भी नये–नये माध्यमों से गुजर रहा है जिससे युवा कलाकारों को एक नई स्वतन्त्रता मिली जिसमें वह बिना किसी दबाव, बिना किसी दायरे में न रहकर खुले आसमान में अपनी अभिव्यक्ति कर सकता है जिसे यह सौगात विरासत में मिली और इस कार्य का श्रेय कुछ कलाकारों को है, जो समूहों व संस्थाओं से या अन्य किसी से जुडे है जिन्होंने कलाकारों की शैलीयों को एक आधार प्रदान कर भावनाओं और विचारों का संग्रह किया और प्रत्येक कला क्षेत्र में सोचनें का प्रयत्न कर नये वातावरण का निर्माण किया जिसमें स्वतन्त्रंता की लहर है जो आधुनिक कला को एक स्वरूप प्रदान करता है और आगे भी यहां कार्य निरन्तर प्रगति पर है। वर्तमान में आधुनिक कला के अर्थ को समझने के लिये हमें सबसे पहले आधुनिक शब्द पर विचार करना होगा। आधुनिक कला के स्वरूप का सीधा अर्थ है देशकाल और वातावरण को अपने विचारों के साथ ताल मेल करके चलना। यदि हम आधुनिक कला की वर्तमान स्थिति की ओर दृष्टि डाले तो हम पाते है कि आधुनिक एक निरन्तर खोज का सफल परिणाम है जिसके अन्तर्गत कला के क्षेत्र में तकनीकी व नवीनता के नाम पर वॉश, टेम्परा, तेल चित्रण की सामान्य जानकारी हमें प्राप्त हुई है। जो आधुनिकता के दायरे में ही सम्भव हुआ है और अनेकों तकनीकों को एकसाथ लेकर चल रही है। जिसमें मानव जीवन को संघर्षों से काफी हद तक लाभ मिला और व्यवहारिक पक्ष काफी मजबूत हुआ जिससे बुद्धि जीवों के मस्तिष्क को दूसरे पक्ष में जाने से राहत मिली और दूसरे पक्ष का भार उतार दिया जिससे मस्तिष्क में एक सोच पैदा हुई जो आधुनिकता की नीवं मजबूत करती है और हर देश के मानव जीवन को एक नई राह में सोचने पर मजबूर कर दिया है।

उपर्युक्त वृतान्त से स्पष्ट है की प्राचीन काल से आधुनिक काल तक प्रागैतिहासिक काल, आधैतिहासिक काल जोगीमारा, अजन्ता, बाघ एलोरा आदि अन्य गुफाए लघुचित्र शैलियाँ–पाल, जैन अपभ्रंश राजस्थानी और मुगल, कम्पनी एक क्रमबद्ध परिवर्तन है उपरोक्त तथ्यों के कलाकारों ने एक परम्परा के दायरे में कार्य किया जो एक सीमित दायरा था जिसमें कलाकार को अपनी अभिव्यक्ति नहीं होती थी। देखा गया है कि निरन्तर परिर्वतन हुआ नये साधनों नई उमंग नये विचारों का समयनुसार बदलाव देखा गया है और जो आगे चलकर कलाकरों को आधार के रूप में पुनरूत्थान शैली या बंगाल शैली का रास्ता दिखाई दिया जिसमें उसे अपने पाश्चात्य बोझ को उतार कर फैक दिया। जिससे पूरे भारत में कलाकारों को एक नई दिशा मिली और कई संस्थाएँ, समूह/ग्रुप का निर्माण हुआ जिससे कलाकारों का अपनी अभिव्यक्ति और अपनी बात–अपने स्वतन्त्र दायरे में है जो "समसामयिक कला का स्वरूप" है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. शर्मा, डा0 लोकेश चन्द्र, *भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास,* कृष्णा प्रकाषन, 2005, पृ0सं0, **8, 170**
2. अग्रवाल, डा0 किशोर, *आधुनिक भारतीय चित्रकला,* संजय पब्लिकेशन, 2012, आगरा, पृ0सं0, **131**
3. वर्मा, डा0 अविनाश बहादुर, वर्मा, अनिल, अन्य, *भारतीय चित्रकला का इतिहास,* प्रकाश बुक डिपो, 2015, बरेली, पृ0सं0, **263**
4. प्रदीप, किरण, *भातीय कला, आकृति– 2,* कृष्णा प्रकाशन, 2007, मेरठ, पृ0सं0, 5
5. कला चित्रकला, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली, पृ0सं0, **13**
6. प्रताप, डा0 रीता, *भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास,* राजस्थान ग्रन्थ अकादमी, 2012, राजस्थान, पृ0सं0, **15**
7. *कला दीर्घा,* वोल्यूम न0 6, अप्रैल 2003, पृ0सं0, **10**
8. *समकालीन कला,* ललित कला अकादमी, अंक 27, जुलाई – अक्टूबर, 2005, पृ0सं0, **25**
9. *क्रिएटिव माइंड,* ललित कला अकादमी, नई दिल्ली
10. *कला संवाद*, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली